भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 29 जुलाई से ३० नवंबर -०६ दिसंबर, 2015 सासाहिक सलाह

(५५ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

सासाहिक सलाह

राज्य/ जिले	नवंबर- दिसंबर माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							सासाहिक सलाह
दिनांक	23	24	25	26	27	28	29	
गुलाबी सूँडी : गुजरात, आंध्रप्रदेश, तेलंगना, महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों से बोलगार्ड II बीटी संकरों पर गुलाबी सूँडी की क्षति तथा जीवित सूँ डियाँ रिकार्ड की गई हैं। सी.आई.सी.आर. की सासाहिक परामर्शी में दिए गए प्रबंधन उपायों को तुरंत अपनाएँ तथा इस सूँडी की सतत निगरानी तथा निरीक्षण करते रहें।								
उत्तरी कपास क्षेत्र								
उत्तरी कपास क्षेत्र के अधिकांश भागों में कपास चुनाई का कार्य लगभग पूरा हो चुका है।								
उड़ीसा								
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	फसल गूलर प्रस्फुटन तथा कपास चुनाई की अवस्था में है। पिछेती बुआई की गई फसल में रस चूषक कीट, *स्पोडोप्टेरा*, धब्बेदार तथा अमेरिकन सूंडियों का प्रकोप देखा जा रहा है। लेकिन सिर्फ जैसिड की संख्या ही आर्थिक हानि सीमा से ऊपर दर्ज की गई है। राज्य के कुछ हिस्सों में जीवाणु झुलसा रोग का प्रकोप देखा गया है। प्रातः 10.00 बजे के बाद ही कपास की चुनाई पूरी तरह से खुले हुए गुलरों से ही करें। बचे हुए हरे गुलरों की बढ़वार के लिए 1.5% डी.ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का फसल पर छिड़काव करें। पहली चुनी हुई कपास को अलग रखें तथा उसे भण्डारित करने से पहले साफ कपड़े की थैलियों में भली-भाँति सुखाकर भरे लें। कपास/रुई के संदूषण से बचने के लिए कपास को जूट के बोरों में भरने से बचें। गुलाबी सूँडी का प्रकोप यदि है तो उसके नियंत्रण के लिए आवश्यकतानुसार संश्लेषित पाइरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें।
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	फसल इस समय गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। काली मृदाओं वाली फसल में सिंचाई दें। अमरेली, भावनगर, जूनागढ़ और भड़ौच में सी.आई.सी.आर. द्वारा किए गए सर्वेक्षण में यह तथ्य सामने आया कि बोलगार्ड II संकरों में दूसरी और तीसरी चुनाई के लिए तैयार 10-80% हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी मौजूद है। गुजरात के दूसरे जिलों में भी गुलाबी सूँडी की क्षति भिन्न-भिन्न प्रमाण में है। हरे
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	

सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	गुलरों को गुलाबी सूँडी की और अधिक क्षति से बचाने के लिए इससे प्रभावित क्षेत्रों में साइपरमेथ्रिन अथवा फेनवलेरेट अथवा लेमड़ा-सायहेलोथ्रिन का एक छिड़काव फसल पर किसान भाई तुरंत कर दें। यदि यह छिड़काव नहीं किया गया तो दिसंबर में गुलाबी सूँडी का भारी नुकसान हो सकता है। कीटनाशक मिश्रणों का प्रयोग कभी न करें। इससे सफ़ेद मक्खी का प्रकोप बढ़ जाएगा जिसके फलस्वरूप कपास चिपचिपी हो जाएगी। फसल को अगले वर्ष 2016 तक न ले जाएँ, इसे दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। ऐसा करना गुलाबी सूँडी के प्रकोप को कम करने तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूँडियों में विकसित हो रही प्रतिरोधक क्षमता को कम करने के लिए आवश्यक है। पिछले मौसम की कपास के डंठल, सूखी लकड़ियों के ढेर खेतों की मेंढों पर दिखाई दे रहे हैं। सूखी लकड़ियों, फसल अवशेषों तथा क्षतिग्रस्त कपास का भण्डारण न करें। कपास के सूखे डंठलों व अन्य अवशेषों को जलाने की अपेक्षा इनका विधिवत कम्पोस्ट बनाएँ। घरों अथवा गोदामों में रखा गया कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंगगों का स्त्रोत बन सकता है। यदि यह बीज गुलाबी सूँडी से क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरंत नष्ट कर दें। चुनी हुई कपास स्वच्छ रहे यह सुनिश्चित करें तथा इसे स्वच्छ कपड़ों के थैलों में रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग ना करें।
वडोदरा	17	3	6	3	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	19	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	10	3	0	0	0	0	फसल इस समय गूलर निर्माण तथा गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से ऊपर लेकिन चेंपा (एफिड) तथा फूलकीट (थ्रिप्स) का प्रकोप नाममात्र का रिकार्ड किया गया है। पहली चुनी हुई कपास को अलग रखें तथा इसे भली- भाँति सुखाकर कपड़ें के थैलों में भण्डारित करें। रुई को संदूषित होने से बचाने के लिए जूट के बोरों में कपास को न भरें।
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	13	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि लाल पत्ती रोग की निगरानी करते रहें और आवश्यकतानुसार इसकी रोकथाम के उपायों को अपनाएँ। लाल पत्ती रोग के लिए संवेदनशील कपास के संकरों की पहचान करके उन्हें अगले वर्ष खेती में प्रयोग न करें। अधिक तापमान तथा सूखा के कारण गूलर झड़न की समस्या देखी जा रही है। बाजार में कपास का अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। पिछेती बोई गई कपास में संरक्षित सिंचाई दी जा सकती हैं। सिंचाई के साथ 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी.ए.पी. का फसल पर छिड़काव पुष्पन अवस्था में करें। हरे गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। कपास की फसल के सर्वेक्षण में धुले तथा नांदुरबार जिलों के कुछ हिस्सों में बोलगार्ड II संकरों में गूलर की गुलाबी सूँडी से हरे गूलर क्षतिग्रस्त पाए गए हैं। राज्य के दूसरे कपास उत्पादक क्षेत्रों में यह समस्या कही-
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	5	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	22	11	0	0	0	0	
परभणी	0	16	7	0	0	0	0	
नांदेड़	0	8	4	0	0	0	0	

बीड़	3	17	4	0	0	0	0	कहीं है। फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करते रहें। यदि ट्रैप में नर पतंगों की पकड़ 8 पतंग/ ट्रैप/रात्रि सतत तीन रातों तक आने की आर्थिक हानि सीमा पहुँचने पर गुलाबी सूँडी के नियंत्रण के उपाय करें। बीजी I तथा बीजी II बीटी कपास के संकरों में विशेष रूप से गुजरात की सीमा से सटे महाराष्ट्र के कपास उत्पादक क्षेत्रों में हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति की निगरानी भी करते रहें। यह निगरानी करना कपास के उन क्षेत्रों में अत्यावश्यक है जहाँ पिछले मौसम में कपास की फसल मार्च/अप्रैल, 2015 तक खेत में रखी गई थी। जिन खेतों में हरे गुलरों में 20 हरे गुलरों को खोलकर देखने से 20% से अधिक क्षति पाई जाने पर संश्लेषित पाइरेथ्राइड का फसल पर तुरंत छिड़काव करें। इससे गुलाबी सूँडी का आगे होने जा रहा नुकसान रुकेगा। साफ- सुथरी कपास चुनें तथा इसे कपड़ों के साफ थैलों में भण्डारित करके रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का इस्तेमाल न करें। कपास के डंठलों/ सूखी लकड़ियों को जमा करके न रखें। कपास की सूखी लकड़ियों, डंठलों व अवशेषों को जलाने के स्थान पर कम्पोस्ट बनाएँ। कपास की चुनाई का कार्य यथासंभव शीघ्र पूरा करें।
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	4	23	13	0	0	0	0	
जलगांव	0	23	13	0	0	0	0	
जालना	0	22	11	0	0	0	0	
औरंगाबाद	6	17	7	5	0	0	0	
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	8	8	0	0	0	0	कपास की फसल हरे गूलर निर्माण से लेकर चुनाई अवस्था के मध्य है। पहली तथा दूसरी चुनाई का कार्य चल रहा है। आवश्यकतानुसार नत्र तथा पोटाश उर्वरकों की विखंडित मात्रा (तीसरी बार) मृदा में दें अथवा नत्र और पोटाश की अतिरिक्त मात्रा अर्थात यूरिया 25 से 30 किग्रा. के साथ 10 से 15 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश की मात्रा चक्रवाती वर्षा से उत्पन्न अतिरिक्त नमी का सदुपयोग करने के लिए मृदा में दें। इस क्षेत्र में सफ़ेद मक्खी का प्रकोप रिपोर्ट किया गया है। सभी रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई है। **बारानी हल्की मृदाएँ :** भारी मृदाओं में फसल वृद्धि सामान्य है। बीजी II बीटी कपास के संकरों में अनंतपुर, कुरनूल तथा गुंतूर जूलों से गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है। फीरोमोन ट्रैप का इस्तेमाल करके इस गुलाबी सूँडी की निगरानी तुरंत शुरू कर दें। तथा प्रति खेत 20 से 50 हरे गुलरों को काटकर खोलकर इनका गुलाबी सूँडी की क्षति तथा संख्या के लिए निरीक्षण करें। यदि ट्रैप में पतंगों की संख्या की पकड़ @ 8 पतंग/ट्रैप/ रात्रि सतत 3 रात्रि तक आने की आर्थिक हानि सीमा पर पहुँचने पर सिफ़ारिश किए गए नियंत्रण उपायों को अपनाएँ। बीजी I, बीजी II तथा बीटी रहित कपास का विशेषत: उन जिलों में तथा उन खेतों में जहाँ पिछले मौसम में कपास की फसल मार्च/अप्रैल, 2015 तक खेतों में रखी गई थी, वहाँ हरे गुलरों की क्षति की भी निगरानी करते रहें। काटे गए 20 हरे गुलरों में यदि गुलाबी सूँडी की क्षति 20% से अधिक है तो तुरंत फसल पर पाइरेथ्राइड का छिड़काव करें। इससे हरे गुलरों में आगे अधिक क्षति नहीं होगी।
वारंगल	0	0	8	0	0	0	0	
खम्मन	3	0	3	0	0	0	0	
कारिंगर	0	5	8	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	0	0	
आंध्रप्रदेश								

गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	0	
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	0	
कर्नाटक								
धारवाड़	0	12	9	8	5	0	0	चक्रवाती वर्षा के कारण कुछ क्षेत्रों में कपास की फसल में जल भराव हो गया है। अत: फसल से किसान भाई अतिरिक्त वर्षाजल को निकाल दें। लाल पत्ती रोग की समस्या को कम करने अथवा इसके अगेती फसल में प्रभावी प्रबंधन के लिए 19:19:19 पानी में घुलनशील उर्वरक का 1.0% अर्थात 10 ग्रा./लीटर पानी के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का 15 दिनों के अंतराल पर फसल पर दो छिड़काव करें। आवश्यक होने पर इन पोषकतत्वों के साथ कीटनाशकों को मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं। मिरिड बाग के प्रभावी नियंत्रण के लिए एसीफेट @ 1.0ग्रा./ली. पानी का फसल पर छिड़काव करें। रायचूर जिले के कुछ भागों में बीजी II बीटी संकरों में हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी की अधिक क्षति दर्ज की गई है। गुलाबी सूँडी के 20% से अधिक हरे गुलरों में जीवित सूँडी पाए जाने पर संश्लेषित पाएरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें। कपास की फसल में फलन की दूसरी बहार लेने के लिए फसल में सिंचाई देने के स्थान पर कपास की बुआई चुनाई समाप्त होने पर कम अवधि की दलहनी फसलों की बुआई दूसरी फसल से रूप में करें। सिंचाई की सुविधा होने पर चना अथवा गेहूँ जैसी रबी की फसलें दूसरी फसल के रूप में कपास के बाद ली जा सकती हैं।
हवेरी	0	9	13	4	0	0	0	
मैसूर	10	25	9	22	3	0	6	
तमिलनाडु								
पेरंबलुर	13	13	5	0	0	0	0	कपास की फसल प्रारंभिक गूलर निर्माण अवस्था में है। दूबघास *सायनोडन डेक्टायलोन*, गाजरघास *पार्थेनियम* तथा ट्राएन्थेमा *पोर्तुलेकेस्ट्रम* जैसे प्रमुख खरपतवारों के नियंत्रण के लिए अंकुरण-पश्चात खरपतवारनाशकों का अनुप्रयोग किया जा सकता है। पायरिथायोबैक सोडियम@ 2मिली./ली. का छिड़काव मेढ़ों पर उगे खरपतवारों के नियंत्रण के लिए करें। *इकाइनोक्लोआ* प्रजाति, *डेक्टायलोक्टेनियम एजिपशियम* जैसी घासें; *सायपेरस* प्रजाति जैसे सेजिज तथा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों *ट्राएन्थेमा पोर्तुकेस्ट्रम, क्लिओम विस्कोसा, फायलेंथस मेडरेसपेटेंसिस* के नियंत्रण के लिए सिफ़ारिश किए गए उपायों पर अमल करें। बारानी कपास में उत्तर-पूर्व मानसून से प्राप्त वर्षाजल को संग्रहीत करने के लिए मृदा नमी संरक्षण उपायों को अपनाएँ। इस सप्ताह भारी वर्षा होने की संभावना है जिससे खेतों में नुकसान हो सकता है। खेतों से अतिरिक्त वर्षाजल की निकासी सुनिश्चित करें। श्रीविलीपुत्तुर में शीतकालीन सिंचित फसल लगाई गई है, यहाँ छिटपुट वर्षा के साथ मौसम ठंडा है। यहाँ फसल गूलर विकास अवस्था में है। रस चूषक कीटों, सफ़ेद मक्खी तथा फूलकीट का प्रकोप दर्ज किया गया है। जड़गलन का प्रकोप भी कहीं-कहीं देखा जा रहा है।
त्रिची	16	11	5	0	4	0	11	
विरुडुनगर	41	19	19	4	4	4	12	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	51-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत सिंह	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय,(पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस. एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, सिरसा-124004 (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय,गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com

डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी. खानपारा	जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ -362001 (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृषि विद्याहपीठ, रीठरी-413722 (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्याहपीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृषि विश्वविद्यालय, प्रभनी-431402 (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृषि विश्वविद्यालय, रायचूर-584102 (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

हिन्दी संसकरण:

उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अधिकारी,
केकअनुसं , नागपुर (महाराष्ट्र)